विषयानुक्रम

पृष्ठ संख्या

• भूमिका i-xi

अध्याय–1

साहित्य और युग चेतना : अन्तर्सम्बन्ध 1–28

• युग चेतना
• युग चेतना की महत्ता
• युग चेतना और उसके विविध स्तर
• परम्परा और चेतना
• पृष्ठभूमि और चेतना
• परम्परा और पृष्ठभूमि
• साहित्य और समाज का युग चेतना से सम्बन्ध
• कथा साहित्य में युग चेतना का स्वरूप

अध्याय–2

जैनेन्द्र के कथा साहित्य में युगीन सामाजिक चेतना 29–71

• कथाकार और समाज : अन्तर्बाह्य सम्बन्ध
• व्यक्ति और समाज
• स्त्री–पुरुष एवं परिवार
• ब्रह्मचर्य
• विवाह और परिवार

• प्रेम और विवाह
• प्रेम विवाह
• अनमेल विवाह
• सेक्स की समस्या
• विवाह–विच्छेद
• वेश्या का स्वरूप
• वैधव्य की समस्या
• स्त्री और राजनीति
• मातृत्व

अध्याय–3

जैनेन्द्र के कथा साहित्य में सांस्कृतिक, धार्मिक एवं आर्थिक चेतना

72–121

• जैनेन्द्र के कथा साहित्य में सांस्कृतिक चेतना
• संस्कृति : शब्द और आशय
• संस्कृति की परिभाषा
• संस्कृति का स्वरूप
• संस्कृति का क्षेत्र और अभिव्यक्ति के उपादान
• संस्कृति और सभ्यता
• कथा साहित्य और संस्कृति
• जैनेन्द्र के कथा साहित्य में सांस्कृतिक चेतना का स्वरूप
• सांस्कृतिक तत्वों का समावेश
• ग्रामीण संस्कृति
• नागर संस्कृति
• विभिन्न विचारदर्शन
• मानवतावादी विचार दर्शन–गांधीवादी विचार दर्शन

- व्यक्तित्ववादी दर्शन
- विविध
- खान–पान
- वेशभूषा–श्रृंगार प्रसाधन
- आचार–विचार और रीति–रिवाज
- आदर्श जीवन मूल्य : एक मूल्यांकन
- जैनेन्द्र के कथा साहित्य में धार्मिक चेतना
- जैनेन्द्र की धार्मिक दृष्टि
- जैन धर्म
- धर्म का अर्थ और स्वरूप
- धर्म और सम्प्रदाय
- धर्म और विज्ञान
- धर्म और राजनीति
- जैनेन्द्र की दृष्टि में अहिंसा
- अपरिग्रह
- परहित
- जीवन में धर्म की उपादेयता
- जैनेन्द्र की दृष्टि में मोक्ष
- जैनेन्द्र के कथा साहित्य में आर्थिक चेतना
- आर्थिक समस्या
- आर्थिक विषमता
- अर्थ और व्यक्ति
- पूंजीवाद के प्रति दृष्टिकोण

अध्याय–4

जैनेन्द्र के कथा साहित्य में दार्शनिक चेतना 122–140

- कथा साहित्य और दार्शनिक चेतना : अन्तर्सम्बन्ध
- जैनेन्द्र की दार्शनिक चेतना का स्वरूप
- नियतवादी दार्शनिक चेतना
- आस्थामूलक भाग्यवादिता
- निष्काम कर्मयोग
- पुनर्जन्म, मृत्यु और अमरत्व

अध्याय–5

जैनेन्द्र के कथा साहित्य में मनोवैज्ञानिक चेतना 141–156

- कथा साहित्य और मनोविज्ञान : अन्तर्सम्बन्ध
- जैनेन्द्र के पुरुष पात्रों में मनोवैज्ञानिक चेतना
- जैनेन्द्र के नारी पात्रों में मनोवैज्ञानिक चेतना

अध्याय–6

जैनेन्द्र के कथा साहित्य में शिल्पगत चेतना 157–209

- कला और शिल्प तथा युग चेतना : अन्तर्सम्बन्ध
- कला का स्वरूप
- साहित्य में शिल्प प्रयोग एवं उसका आशय
- जैनेन्द्र के कथा साहित्य में शिल्पगत चेतना
- कथावस्तु–शिल्प
- चरित्र–चित्रण–शिल्प
- स्वप्न–दिवास्वप्न–विभ्रम
- सम्मोहन तथा मुक्त आसंग

- अन्दर्दर्शन
- अन्तर्विवाद
- संघर्ष
- कथोपकथन शिल्प
- द्विमुखी संवाद
- देशकाल तथा वातावरण निर्माण
- प्रकृति–चित्रण
- भाषा–शैली
- संक्षिप्तता
- अनिश्चयात्मकता की शैली
- तुलनात्मक शैली
- समर्थ भाषा
- वाक्य रचना
- शब्द भण्डार
- उद्देश्य प्रतिफलन शिल्प
- **उपसंहार** 210–215
- **सहायक ग्रन्थ सूची** 216–221